हवाई जहाज में हुए संवाददाता सम्मेलन में प्रधानमंत्री की प्रारंभिक टिप्पणी

10 जुलाई, 2009

मैं जी-5 देशों (भारत, ब्राजील, चीन, मैक्सिको और दक्षिण अफ्रीका) के नेताओं, जी-5 + जी-8 और मिस्त्र की तथा जी-8, जी-5, मिस्त्र और अफ्रीका के देशों की बैठकों में शामिल होने के बाद भारत वापस लौट रहा हूं। वहां व्यापार पर मुख्य आर्थिक मंच और जलवायु परिवर्तन के संबंध में भी बैठकें आयोजित की गई थीं।

ये बैठकें ऐसे समय में हुईं जब विश्व विकसित देशों में वित्तीय संकट से पैदा हुई आर्थिक मंदी से उबरने के लिए प्रयासरत रहा है। बैठकों में हुई चर्चाओं के बाद, मुझे ऐसा लगता है कि यद्यपि मंदी से उबरने के कुछ लक्षण दिखाई दे रहे हैं, फिर भी विश्व अर्थव्यवस्था को पहले हुई वृद्धि की दर के बराबर पहुंचने में अभी भी बहुत दूरी तय करनी है और यह प्रश्न उठ सकता है कि क्या विश्व अर्थव्यवस्था में ऐसी स्थिति (वृद्धि की दर) शीघ्र संभव हो पाएगी।

हमने अन्य विश्वव्यापी मुद्दों पर भी चर्चा की जैसे जलवायु में परिवर्तन, सतत विकास और खाद्य सुरक्षा के माध्यम से भुखमरी को दूर करना। व्यापार के संबंध में संरक्षणवाद के खतरे की भी विशेष रूप से चर्चा की गई। यह स्पष्ट है कि इन सभी मुद्दों के लिए सार्थक विश्वव्यापी कार्रवाई के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद से शुरू करते हुए विश्वव्यापी नियंत्रण से जुड़ी संस्थाओं का पुनर्गठन किए जाने की आवश्यकता है। इस विचार को हमारी बैठकों के घोषणापत्रों में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया।

मैं अपने देश लौटते समय इस बात से पूरी तरह सहमत हूं कि हमें अपने देश में 8 से 10% तक की वृद्धि की दर प्राप्त करने के लिए सभी उपायों को सुदृढ़ करने के प्रयास जारी रखने होंगे। आने वाले समय में अंतरराष्ट्रीय परिवेश कुछ समय के लिए इतना अनुकूल नहीं होगा, जितना पहले था। परंतु मुझे पूरा विश्वास है कि अपनी घरेलू आर्थिक शक्तियों के कारण हम अपनी द्रुत और समावेशी संवृद्धि के पूर्व मार्ग पर शीघ्र ही लौट आएंगे।

अंगोला, जापान, संयुक्त राज्य अमरीका, रूस, यूनाइटेड किंगडम, आस्ट्रेलिया और मेजबान इटली के नेताओं और विश्व के अन्य बहुत से नेताओं के साथ भी मेरी सारगर्भित बातचीत हुई थी।

****